होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम

बाल वैज्ञानिक

कक्षा आठ

किट कापी

खण्ड दो

मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम

मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम, भोपाल द्वारा प्रकाशित एवं उनके लिए
प्रीमियर ऑफसेट वर्क्स, इलाहाबाद द्वारा मुद्रित

आवरण
विष्णु चिंचालकर, इन्दौर

**बाल वैज्ञानिक (कक्षा आठ) के खंड दो
की पुस्तक के साथ
यह किट कापी मुफ्त मिलेगी**

पुस्तक के बिना खरीदने पर किट कापी का मूल्य : 50 पैसे

इस कापी में यह है :

वस्तु का नाम	किस अध्याय में ?	संख्या	उससे क्या करोगे ?
अध्याय के चित्र-7 का बड़ा रूप	आकाश की ओर-2	1	इस चित्र पर सूर्य और चन्द्रमा के पथ बनाना
पाचन तंत्र	शरीर के आन्तरिक अंग और उनके कार्य	1	इस चित्र में पाचन तंत्र के अंगों को नामांकित करना (प्रश्न 16)
मूत्र तंत्र	शरीर के आंतरिक अंग और उनके कार्य	1	इस चित्र में मूत्र तंत्र के अंगों को नामांकित करना (प्रश्न 46)
(क) अलग-अलग छपे हुए आंतरिक अंग (ख) अलग-अलग छपे हुए आंतरिक अंग	शरीर के आंतरिक अंग और उनके कार्य	1 1	आंतरिक अंगों का मॉडल बनाने के लिए अंगों के चित्रों को काट कर अलग-अलग करना
मानव शरीर की बाह्य-रेखा	शरीर के आंतरिक अंग और उनके कार्य	1	काटकर अलग किए हुए अंगों के चित्रों को अध्याय में निर्देशित क्रम से इस चित्र में जमाकर आंतरिक अंगों का मॉडल तैयार करना

इन चीजों की जरूरत पड़ने पर इन्हें **इस कापी में** से काटकर निकाल लेना। **वर्ष के अंत तक तुम्हारी यह कापी खतम हो जानी चाहिए।**

बाल वैज्ञानिक (कक्षा आठ) के खण्ड दो के निम्नलिखित अध्यायों से सम्बन्धित किट कापी की सामग्री खण्ड एक की पुस्तक के साथ मिलने वाली किट कापी में मिलेगी-

संयोग और सम्भाविता

गति के ग्राफ

आकाश की ओर-२

मिट्टी

प्रकाश

सूर्य
चन्द्रमा
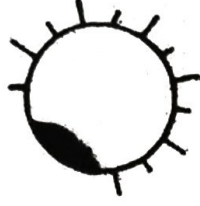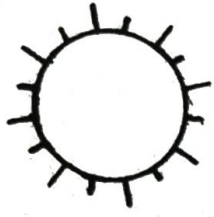
आकाश की ओर-२
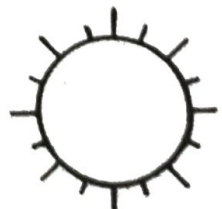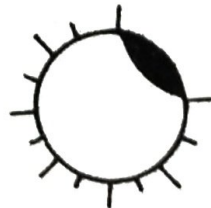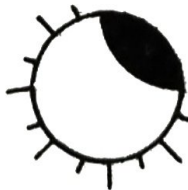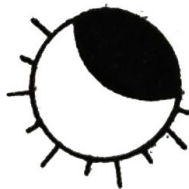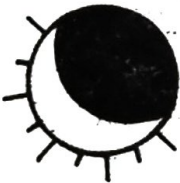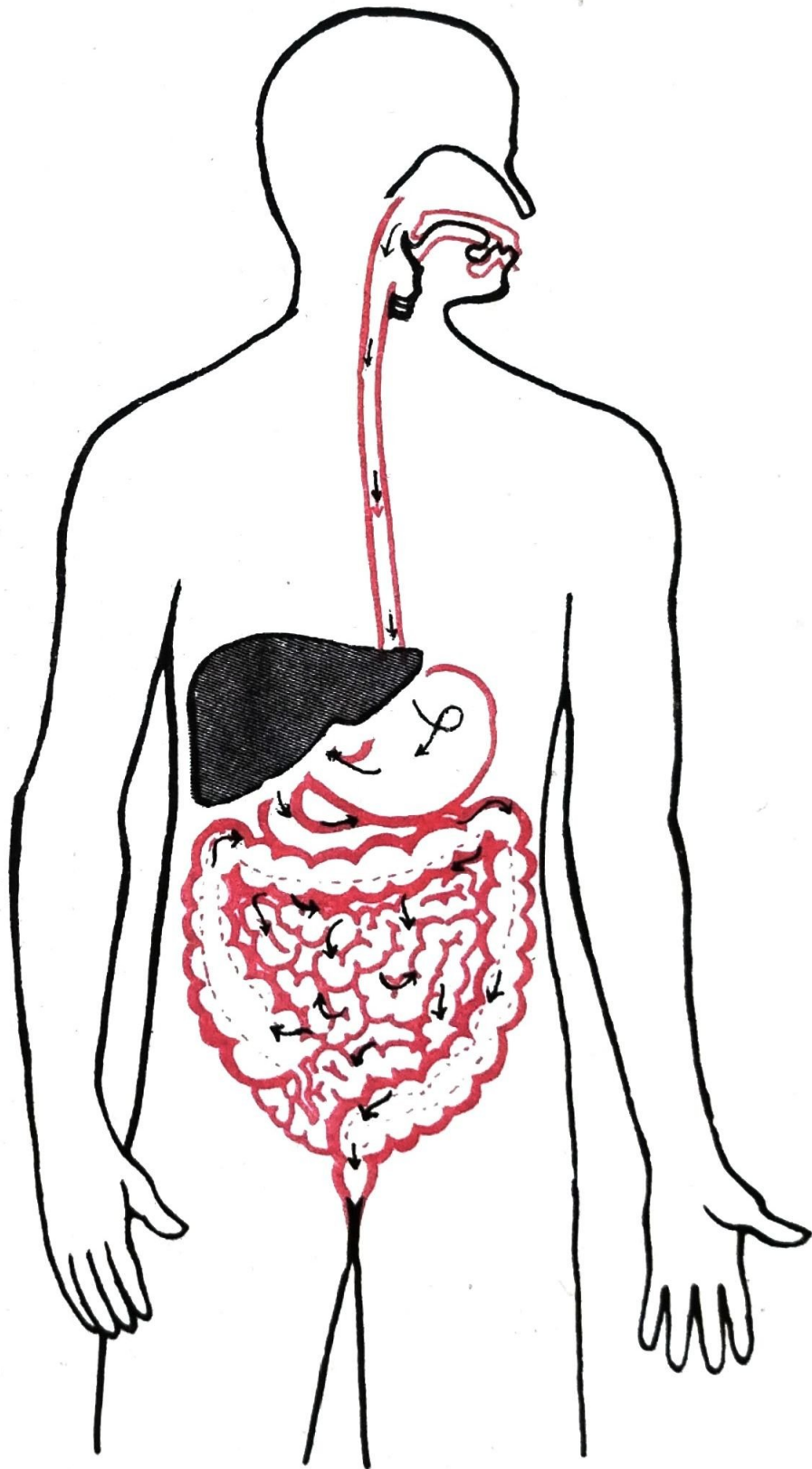
पाचन तंत्र

यहाँ से काटो

मूत्र तंत्र

यहाँ से काटो

शरीर के आंतरिक अंग और उनके कार्य
यहाँ से काटो
क
ख
मत काटिये
ड
ढ
मत काटिये
काटिये
य
ट
ठ
ग
घ

च
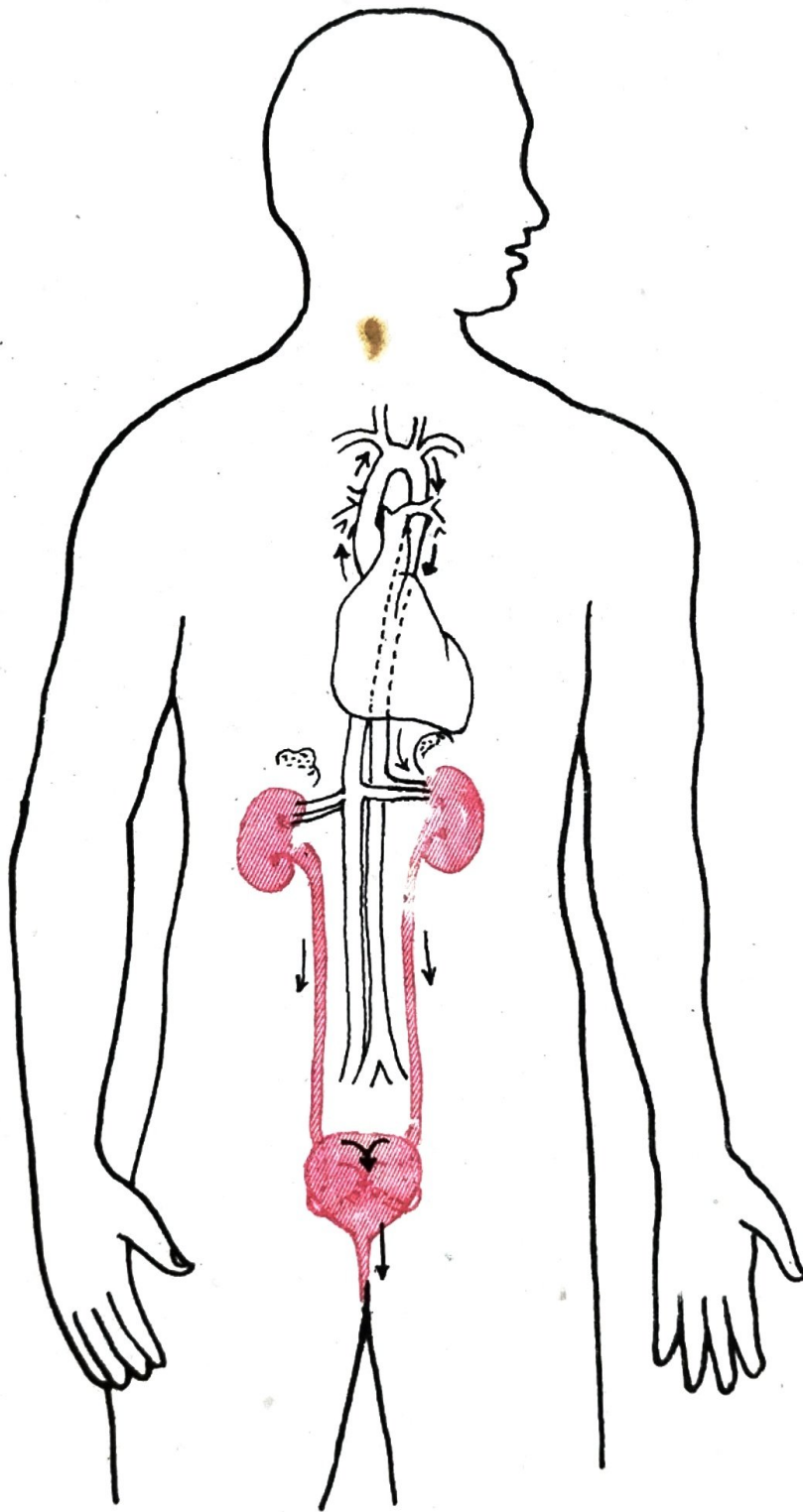
यहाँ से काटो
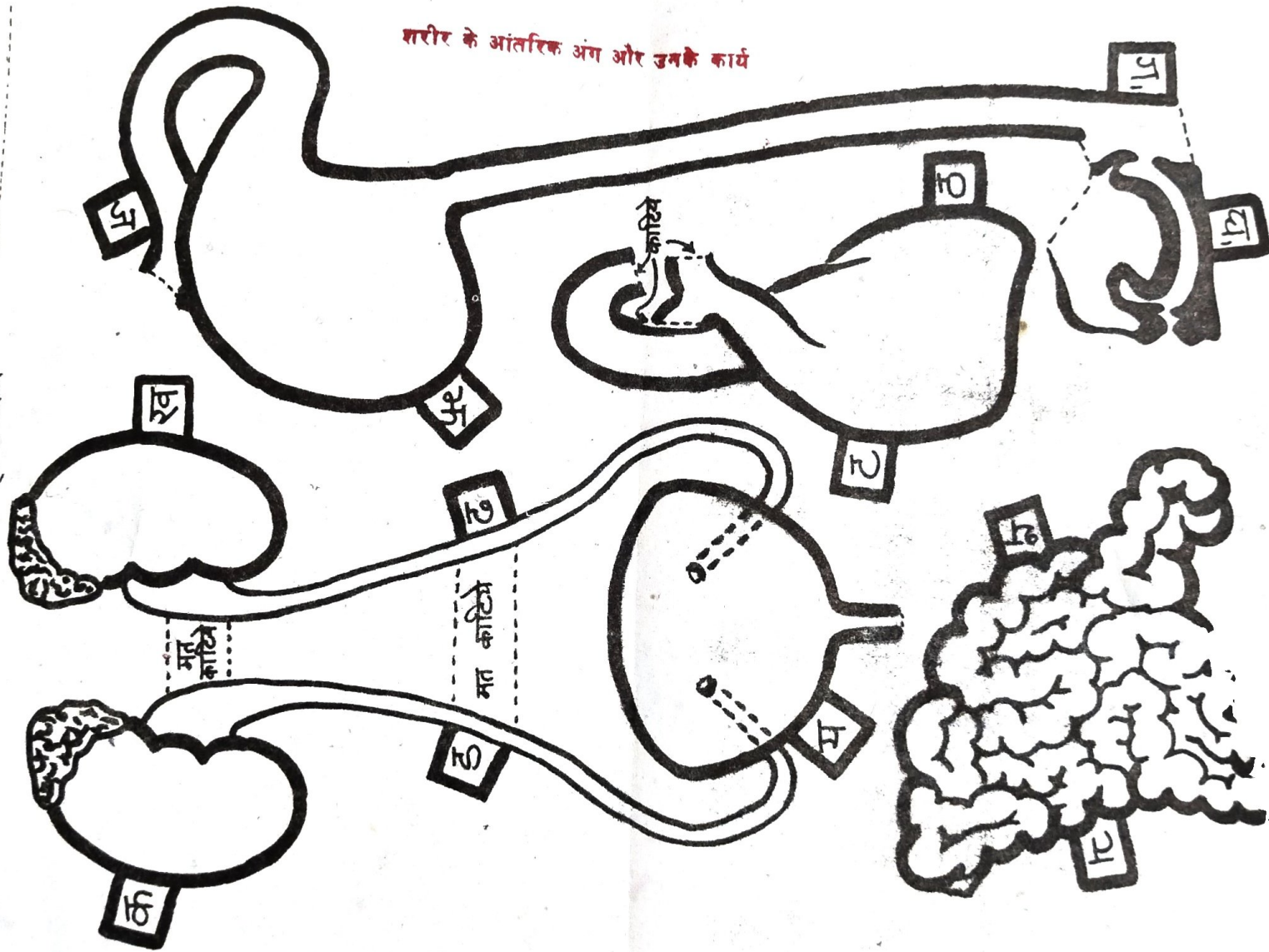
शरीर के आंतरिक अंग और उनके कार्य

ज-झ आमाशय
ट-ठ हृदय
य मूत्राश
र-ल मस्तिष्
छ
च
ट
ठ
भ
झ
प
ब
क
ख
फ
ज
त
ड
ढ
द
ध
थ
य
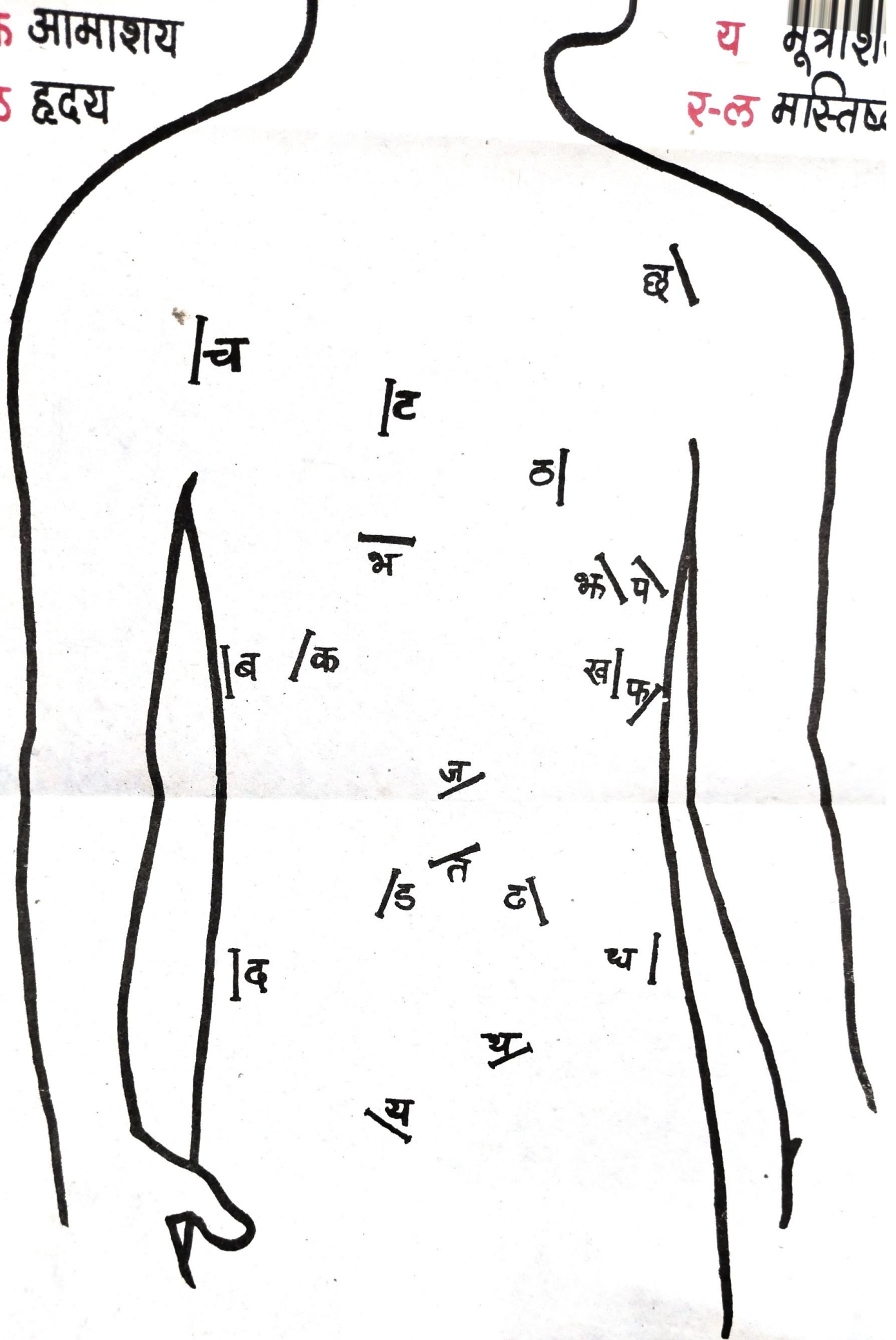
"आप प्रचलित विश्वास का विरोध करके देखें, आप निष्कलंक अवतार समझे
वाले किसी नायक, किसी महान पुरुष की आलोचना करके देखें। आपके तर्क का
ाब आपको घमंडी कह कर दिया जायेगा। इसका कारण मानसिक जड़ता है।
ोचना और स्वतंत्र ढंग से सोचना क्रान्तिकारी के दो मुख्य अनिवार्य गुण होते हैं।
हान हैं, इसलिए उनकी कोई आलोचना न करे, वे उससे ऊपर उठ चुके हैं,
लिए वे राजनीति या धर्म, अर्थव्यवस्था या सदाचार के बारे में कुछ भी कहें तो
सही होता है। आप मानते हों या न मानते हों, लेकिन आपको यह जरूर कहना
गा, 'हाँ, यह बात ठीक है।' ऐसी मानसिकता हमें न सिर्फ प्रगति की ओर नहीं ले
ती है बल्कि यह तो स्पष्ट तौर पर प्रतिगामी (मानसिकता) है।"

क क्रान्तिकारी सबसे अधिक तर्क में विश्वास करता है। वह केवल तर्क और तर्क
ही विश्वास करता है।"

.... शहीद-ए-आजम भगतसिंह